ओ३म्

पुराणों को पढ़िये तो

लेखक :
वेद, शास्त्र, पुराण मर्मज्ञ
अमरस्वामीजी महाराज

अनुवादक व सम्पादक :
प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशक :
श्री घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास
हिण्डौन सिटी-३२२ २३० (राजस्थान)

प्रकाशित प्रतियाँ : १५०००

मूल्य : दो रुपये

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय भूमिका

मानवीय सृष्टि का यह नियम है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है, परन्तु ईश्वरीय सृष्टि का नियम इससे सर्वथा अलग है। मनुष्य आवश्यकता पड़ने पर नये-नये आविष्कार करता है, परन्तु परमात्मा ने जीवों के कल्याण के लिए उनकी आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए सभी आविष्कार आवश्यकताओं से पूर्व ही कर दिये, यथा—प्यास से पूर्व जल बना दिया। पशु, पक्षी, मनुष्य आदि बाद में बने फल, फूल, वनस्पतियाँ, अन्न पहले ही पैदा किये गये। श्वास के लिए वायु पहले बनी, श्वास लेनेवाले बाद में बनाये गये। अग्नि पहले थी, चाँद, पृथिवी आदि सब पहले बने इनका प्रयोग करनेवाली योनियाँ बाद में निर्मित हुईं।

इसी प्रकार परमेश्वर ने बुद्धिरूपी आँख के लिए ज्ञानरूपी सूर्य का प्रकाश भी सृष्टि के आदि में ही चार ऋषियों की हृदय-गुहा में कर दिया। संसार के सबसे पुराने व ईश्वरीय ग्रन्थ होने से सम्पूर्ण मानव समाज वेद को पढ़ता, पढ़ाता व सुनता, सुनाता आया है। सम्पूर्ण सृष्टि में ज्ञान के आदि स्रोत वेद के प्रति श्रद्धा व पूजा का भाव रहा, परन्तु स्वार्थी व धर्मद्वेषी मनुष्यों को यह अच्छा न लगा। ऐसे मन्दभागी लोग संसार को ईश्वर से विमुख करने के उपाय सोचने लगे। जब सूर्योदय होता है तो अन्धेरे से प्रेम करनेवाला एक प्राणी सूर्य पर पक्षपात, क्रूरता व अन्याय करने के दोष लगाता है। सद्ज्ञान वेद से चिढ़नेवाले भी वेद पर दोष लगाकर मनुष्य समाज को भ्रमित करने के यत्न करने लगे।

Scanned by CamScanner

इन चालाक लोगों ने 'हिंग लगे न फिटकरी रंग चोखा हो जाए' की उक्ति के अनुसार लोगों को धर्मच्युत् करने का एक सरलतम उपाय निकाल ही लिया। इन्होंने देखा कि लोग वेद को अनादि, सनातन व पुराने-से-पुराना होने के कारण मानते व पूजते हैं। पुराने सूर्य का कोई विकल्प नहीं। पुराने जल, अग्नि व वायु के पुरातन सनातन नियमों का कोई विकल्प नहीं। इनके बिना काम नहीं चलता। पुराने वेद-ज्ञान के बिना भी मनुष्य का काम नहीं चल सकता। लोग इस अटल नियम को जानते थे। स्वार्थी, धूर्त्त लोगों ने पुराण नाम से नूतनग्रन्थ गढ़-गढ़कर लोगों को भ्रमित किया कि देखो ये पुराने ग्रन्थ हैं, यही पुरातन रीति है, यही सनातन धर्म है। झूठ का प्रचार इतने प्रबल वेग से किया गया कि कालान्तर में करोड़ों लोग ईश्वर के पुरातन, सनातन, अनादि वेद-ज्ञान को तो भूल गये और ऋषियों मुनियों को कलङ्कित करनेवाले पुराणों को ही पुराने सनातन धर्मग्रन्थ मान लिया। हिन्दूजाति ऐसी पथभ्रष्ट हुई कि उसने ईश्वर के वेदादेश को ठुकराकर पौराणिक रूढ़ियों, कुरीतियों, सृष्टि-नियम विरुद्ध कहानियों को, गप्पों को ही धर्म मान लिया।

महर्षि दयानन्द ने जब भागवत् में श्री कृष्ण महाराज के सम्बन्ध में घटिया अश्लील कहानियाँ सुनीं, पढ़ीं तो उनका कलेजा फट गया। महाभारत में शिशुपाल ने श्री कृष्णजी को एक सौ गालियाँ दीं, परन्तु वे दोष श्री कृष्ण पर नहीं लगाये जो भागवत् पुराण व अन्य पुराणों में हैं। इससे महर्षि दयानन्द ने पुराणों के विरुद्ध अपना सिंहनाद किया। महर्षि का घोष है कि ऋषि-मुनियों का, पूर्वजों का, श्रीराम व कृष्ण का अपमान नहीं सहा जा सकता। कृष्ण का अपमान करनेवाले पुराण त्याज्य हैं। बस यह सुनते ही पौराणिकों

Scanned by CamScanner

ने देखा कि अब तो चोर पकड़ में आ जायेगा। चोर को कैसे बचाया जाए?

उन्हें भी बड़ी दूर की सूझी। उन्होंने भी 'चोर मचाये शोर—चोर चोर' की उक्ति के अनुसार शोर मचाना प्रारम्भ कर दिया। महर्षि दयानन्द व उनकी शिष्य मण्डली पर श्रीराम-कृष्ण आदि महापुरुषों की निन्दा का दोष लगाकर अपना अपराध छुपाने व अपनी जान बचाने में लगे। पुराणों में कई अच्छे नैतिक उपदेश भी हैं। मूर्त्तिपूजा आदि बुराइयों का खण्डन भी मिलता है। पाषाण पूजकों को गधा व भार ढ़ोनेवाला बैल भी लिखा है। कुछ इतिहास सम्बन्धी मूल्यवान् सामग्री भी है। कुछ अलङ्कार भी होंगे, परन्तु ऋषियों मुनियों की उत्पत्ति, देवी-देवताओं के लड़ाई, झगड़े, लिङ्ग-योनि विषयक गाथा, परस्त्रीगमन, पशुओं से महापुरुषों की उत्पत्ति के प्रसङ्ग पढ़ते हुए लज्जा आती है। विधर्मी इन्हीं गाथाओं को पढ़-पढ़कर आर्य जाति पर वार करते चले आये हैं।

एक ईसाई लेखक के ये शब्द पढ़िये और फिर कहिए कि महर्षि दयानन्द भागवत् पुराण के रचनेवाले की जान को रोते या न रोते। महर्षि का रक्तरोदन इन पंक्तियों को पढ़कर समझ में आ जाएगा। श्री जान मर्दोच ने श्री कृष्ण के बारे में अपनी एक प्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है—

"The popular idea of him is found in the Bhagvad Purana. He is represented as mischievous and disobedient as a child, guilty of theft and lying, stealing the clothes of the gopis and sporting with them, as having 8 queens and 16000 wives, who burnt up kasi,

Scanned by CamScanner

destroying the inhabitants and who finished his course by slaying a great number of his 18000 sons."*

अर्थात् उसके बारे में लोकप्रिय विचार भागवत् पुराण में पाया जाता है। वहाँ उसे उच्छृङ्खल और आज्ञा का पालन न करनेवाले बालक के रूप में, चोरी व झूठ बोलने का अपराधी, गोपियों के वस्त्र चुरानेवाला और उनसे क्रीड़ा करनेवाला, आठ रानियों और १६००० पत्नियाँ रखनेवाला दर्शाया गया है, जिसने काशी को फूँक दिया, वहाँ के निवासियों को विनष्ट किया और जिसने अपने अभियान को १८००० पुत्रों में से अधिकांश संख्या के वध के साथ समाप्त किया।

ये सब दोष लगाकर ईसाई लेखक घबराया, थर्राया। उसे स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी योगेन्द्रपाल और ठाकुर काहनचन्द वर्मा जैसे आर्य विचारक दिखाई दिये। उसके सामने सत्यार्थप्रकाश व पण्डित लेखराम का साहित्य आया। तब उसे महर्षि के भाव अपने शब्दों में देने पड़े। वह लिखता है—

"In the Bhagvad Gita, included in the Bishma Parva of the Mahabharata, there is no reference to the disgraceful conduct of Krishna as described in the Puranas, but he discourses to Arjuna on the Vedanta philosophy."+

हम अपनी लेखनी को विराम देते हुए जाति प्रेमी, धर्म प्रेमी,

---

* The Religious History of India P. 128. लण्डन व मद्रास से सन् १९०० में प्रकाशित हुई पुस्तक।

\+ द्रष्टव्य वही पृष्ठ 128।

Scanned by CamScanner

प्रबुद्ध पाठकों से कहेंगे कि वे श्री जान मर्दोंच के शब्दों का महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश* में दिये गये श्रीकृष्ण विषयक उद्गारों व विचारों से तुलना करके बतायें कि क्या ये वाक्य एक ईसाई के मन में वैदिक धर्म की गूँज नहीं है? श्रीजान भी महर्षि दयानन्द के साथ स्वर मिलाकर श्रीकृष्ण को निष्कलङ्क घोषित करते हैं। अब हम पाठकों से कहेंगे कि वे हमारे सद्भावों को, अन्तःवेदना को समझें, अनुभव करें और पुराणों को विचारपूर्वक पढ़ें। देश धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्ध हों। यही कल्याण का मार्ग है। श्रीमान् अमर स्वामीजी की यह पुस्तिका १९३५ में उर्दू में छपी थी। ६० वर्ष बाद हमने इसका अनुवाद जनहित में किया है।

---

* द्रष्टव्य सत्यार्थप्रकाश, पं० युधिष्ठिरजी द्वारा सम्पादित शताब्दी संस्करण, पृष्ठ ५२९-५३०।

Scanned by CamScanner

पुराणों में क्या है?

पुराणों को क्यों मानें?—पुराणों और पौराणिकों से हमारी किसी पूर्वजन्म की शत्रुता नहीं है तथापि हम पुराणों का विरोध ही करते हैं और मैं तो इनका इतना विरोधी हूँ कि यदि मैं सनातन धर्मी भी होता तो भी पुराणों को कतई न मानता। संसार में ऐसा कौन-सा मनुष्य होगा जो अपने माता, पिता, पितामह, गुरुओं, आचार्यों तथा ऋषियों-महर्षियों पर दोषारोपण करने को अच्छा जाने? भले ही किसी के पूर्वज कितने भी बुरे क्यों न हों तथापि कोई मनुष्य उनकी निन्दा सुनना पसन्द नहीं करता। सुपुत्र की तो बात ही क्या कुपुत्र-से-कुपुत्र तथा निर्लज्ज-से-निर्लज्ज मनुष्य भी यह सहन नहीं करता है कि उसके सामने उसके पूर्वजों पर कोई इस प्रकार के दोष लगाए।

छी! छी! ऋषियों का अपमान—कहाँ यह कि कोई और उनका जीवन लिखे और उसमें उनपर घृणित-से-घृणित दोष लगाए और उनके वंशज उन पुस्तकों को प्रकाशित, प्रचारित-प्रसारित करें, क्रय करें और उनकी कथाएँ भी करवायें। विशेष बात यह कि यह उस स्थिति में है जबकि वे पूर्वज उच्च आचरण, निर्मल जीवन, स्वच्छ व्यवहार और पवित्र विचारवाले हुए हों। उन पर अश्लील दोष लगाए जाते हैं और दोष भी साधारण से नहीं प्रत्युत्त ऐसे दोषारोपित किये जाएँ जिन्हें कोई सज्जन पुरुष अपने शत्रु पर भी लगाना उचित न समझे। या यह कहिए कि ऐसे दोष जिन्हें विरोधी पर भी लगाने से पूर्व एक सज्जन को सौ बार सोचना पड़े।

स्वाभिमानी जातियाँ क्या करती हैं?—संसार की प्रत्येक

Scanned by CamScanner

स्वाभिमानी जाति जिसमें थोड़ी-सी भी बुद्धि व ज्ञान हो, वह अपने पूर्वजों पर लगाए गये प्रत्येक कलङ्क को मिटाने का प्रयास करती है। इस्लामी-साहित्य में हदीसों व कुछ अन्य पुस्तकों में भी ऐसी सामग्री पाई जाती है जिनसे हज़रत मुहम्मद साहब व अन्य मुसलमान पूर्वजों पर कई दोष आते हैं। आज प्रत्येक मुसलमान भले ही वह किसी भी सम्प्रदाय का हो, ऐसी हदीसों की सच्चाई को स्वीकार नहीं करता। ऐसा साहित्य अमान्य घोषित किया जा रहा है।* इन्हें मान्यता देने के लिए कोई भी कतई आगे नहीं आता। ऐसी पुस्तकों का खण्डन करते हुए व्याख्याता व्याख्यान दे रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओं में लेख छप रहे हैं। बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जाते हैं। मौलाना मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब की पुस्तक 'हफ़वात-उल-मुसलमीन' ऐसी ही पुस्तकों में से एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसमें ऐसी अनेक पुस्तकों के प्रमाण उद्धृत किये गये हैं जो आपत्तिजनक व हटाने योग्य हैं।

पौराणिक कभी मुसलमानों से टकराये?—परन्तु अत्यन्त खेद व दुःखी हृदय से यह लिखना पड़ता है कि हमारे सनातन धर्मी भाई उन पुराणों को जिनमें कि हमारे पूर्वजों ऋषियों व महर्षियों पर अश्लील-से-अश्लील दोष थोपे गये हैं—इस प्रकार छाती से चिपकाये बैठे हैं जैसे बन्दरिया अपने मृत बच्चे को चिपकाए रखती है। यह शत-प्रतिशत सत्य बात है कि जब तक सनातन धर्मी इन पुराणों को मानने से इनकार नहीं करेंगे तब तक वे आर्यसमाज,

---

* सर सैयद अहमद, डॉ० गुलाम जेलानी तो हदीसों को सिरे से ही नहीं मानते। इन्हें सबल युक्तियों से झुठलाया जा रहा है।

Scanned by CamScanner

ईसाइयत व इस्लाम के सामने खड़े होने का साहस कर ही नहीं सकते। यही कारण है कि आज पर्यन्त पौराणिक ईसाइयत व इस्लाम के सामने कभी खड़े ही नहीं हुए।* यही कारण है कि आज पर्यन्त सनातन धर्म का ईसाइयत व इस्लाम से एक भी शास्त्रार्थ नहीं हुआ। आर्यसमाज के सामने कभी-कभी विवशता के कारण खड़ा होना पड़ता है। इसमें भी पहले तो टालमटोल ही की जाती है। जब किसी प्रकार भी न टले और सिर पर आ ही बने तो फिर शास्त्रार्थ के बीच में गड़बड़ डालकर उसको बन्द करा देना तो बहुत प्रबल व अन्तिम हथियार है।

जब पोल खुलती है तो—गतवर्ष पं० माधवाचार्यजी शास्त्री से बद्दोमल्लही में मेरे दो शास्त्रार्थ होने निश्चित हुए थे। दोनों पक्षों में लिखा पढ़ी हो गई। प्रतिष्ठित मुसलमानों के भी उसपर हस्ताक्षर हुए। प्रथम दिन शास्त्रार्थ हुआ। मैंने पुराणों पर ऐसे आक्षेप किये जिनमें से एक का भी पं० माधवाचार्य के पास उत्तर न था। इसलिए दूसरे दिनके शास्त्रार्थ में गड़बड़ मचाने लगे। और तीसरे दिन पुलिस में रिपोर्ट करवाकर शास्त्रार्थ ही बन्द करवा दिया।+

---

* माधवाचार्य, कालूराम, राजनारायण, ज्वालाप्रसाद आदि सब पौराणिकों ने महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज को गालियाँ दे-देकर ही पापी पेट को भरने का धन्धा किया। कभी भी उन्होंने ईसाई मुसलमानों के उत्तर प्रत्युत्तर में एक ट्रैक्ट तक नहीं लिखा। 'जिज्ञासु'

+ 'निर्णय के तट पर' ग्रन्थ में इस शास्त्रार्थ की तिथि सन् अशुद्ध छपा है। यह १९३४ ई० में हुआ था। यह शास्त्रार्थ निर्णय के तट प्रथम खण्ड में छपा हुआ है। शास्त्रार्थ की समाप्ति पर वहाँ की सनातनधर्म सभा के प्रधान स्टेशन मास्टर श्री बाबू लेखरामजी ने घोषणा की कि—''मैं आज से सनातन धर्मी नहीं रहा।'' 'जिज्ञासु'

Scanned by CamScanner

एक दुःखद घटना—इसके कुछ दिनों के पश्चात् आर्यसमाज बद्दोमल्लही के उत्सव पर पं० बुद्धदेवजी मीरपुरी शास्त्रार्थकर्त्ता थे और मैं शास्त्रार्थ का प्रधान था। पं० माधवाचार्यजी ने गोसाईं गङ्गाधर को गड़बड़ मचाने के लिए खड़ा कर दिया। उन्होंने अपना पार्ट बहुत अच्छी प्रकार से किया और शास्त्रार्थ नहीं होने दिया। ईसाइयों, मुसलमानों, मिर्ज़ाइयों व सिखों सबने कहा कि आप लोग समय नष्ट कर रहे हैं, परन्तु उन्होंने एक न मानी। अन्ततः थानेदार ने आदेश दिया कि अविलम्ब पण्डाल से बाहर चले जाओ। तब बाहर चले गये और इस प्रकार सनातन धर्म की जय मनाते हुए घर पहुँचे।

आदि से अन्त तक दो चार पुराण अवश्य पढ़िये—इस वर्ष मार्च १९३५ में एक ही समय में ऊधमपुर व होशियारपुर में शास्त्रार्थ हो रहे थे। ऊधमपुर में आर्यसमाज की ओर से पं० बुद्धदेवजी मीरपुरी के सामने पं० माधवाचार्य व श्रीकृष्णजी शास्त्री थे। वहाँ इन दोनों महानुभावों ने गड़बड़ मचाकर शास्त्रार्थ समाप्त करवाया। होशियारपुर में आर्यसमाज की ओर से पं० गंगाशरण और मैं था और पौराणिकों की ओर से पं० कालूराम व पं० अखिलानन्दजी ने अपने स्वभाव के वशीभूत जी भरकर गालियाँ दीं और झगड़ा करवाकर शास्त्रार्थ बन्द करवा दिया। पुराणों का भार जब तक सनातन धर्म की पीठ पर रहेगा तब तक सनातन धर्म की कमर अवश्य टूटती ही रहेगी। जो भी व्यक्ति दो चार पुराणों को आदि से अन्त तक पढ़ लेगा, वह अवश्य आर्यसमाजी बन जाएगा।

पुराणों पर विश्वास डगमगा जाये तो—यदि किसी सांसारिक कारण से ऐसे व्यक्ति को सनातन धर्मी ही कहना और रहना पड़े तो भी पुराणों पर उसका विश्वास नहीं रह सकता। जिसका विश्वास

Scanned by CamScanner

ही नहीं रहा, वह शास्त्रार्थ क्या करेगा? अतः जहाँ भी शास्त्रार्थ का चैलेंज किया जाता है वहीं कोई-न-कोई बहाना बनाकर इस विषय से इनकार कर दिया जाता है। इसी कारण अन्य विषयों से भी कतरा जाते हैं।

पुराणों की कुछ प्यारी-प्यारी सुन्दर बातें—सज्जनवृन्द! यहाँ उदाहरण के लिए पुराणों की कुछ चुनी हुई महत्वपूर्ण बातें इस पुस्तिका में दी जाती हैं। इन्हें पढ़िये और तनिक विचारिए। श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज ने गीता में कहा है—

यदा यदा चरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
*स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥**

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जैसा-जैसा आचरण करता है संसार का साधारण पुरुष भी वैसा-वैसा ही करता है। जिस वस्तु को वह प्रमाण मानकर, आदर्श मानकर चलता है, संसार उसी का अनुसरण करता है।

(१) *समरथ को नहीं दोष गोसाईं?*—इस वाक्य को कहने और इस नियम को माननेवालों ने श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज की सोलह सहस्र स्त्रियाँ पुराणों में लिखी हैं। श्री कृष्णचन्द्रजी गीता में कहते हैं कि मैं कितने ही कार्य केवल इसीलिए करता हूँ कि मुझे देखकर लोग वैसा ही करें। मैंने पं० माधवाचार्यजी से पूछा कि यह कार्य श्री कृष्णचन्द्रजी ने इसलिए किया है कि मेरे भक्त भी इसी प्रकार से सहस्त्रों स्त्रियों से विवाह करें। इसका उत्तर सारे पौराणिक एक ही देते हैं वही उन्होंने भी दिया। वह यह कि समर्थवान् को

---

* द्रष्टव्य श्रीमदभगवदगीता ३-११

Scanned by CamScanner

कुछ दोष नहीं। सामर्थ्य का अर्थ यदि बल है तो सीधी बात है कि संसार में जितने भी पाप हैं उन्हें वही लोग करते हैं जिनमें उन्हें करने का सामर्थ्य होता है। उदाहरण के लिए किसी भी नपुंसक को कभी व्यभिचार करते नहीं देखा गया। इस नियमानुसार सब पापों को उनके करने का सामर्थ्य रखनेवाले ही करते हैं।

दोषी तो निर्बल हो सकता है—और सामर्थ्यवाले को कोई दोष नहीं। दोष तो तब होता है जब सामर्थ्यहीन कोई व्यक्ति किसी प्रकार का पाप करे। अर्थात् व्यभिचार का दोष तब होगा यदि कोई नपुंसक होते हुए ऐसा कुकर्म करेगा। अन्यथा दूसरी दशा में 'समरथ को नहीं दोष गोसाईं'।

(२) इसके अतिरिक्त भागवत् में श्री कृष्णचन्द्र पर परस्त्रीगमन का दोष लगाया गया है और प्रश्न उठने पर यही उत्तर जो ऊपर दिया गया है, वहाँ दिया है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में आया है कि वायु ऋषि की पत्नी को देखकर श्री कृष्णचन्द्रजी का कामबाण से पीड़ित होने पर वीर्यपात हो गया। देवों की सभा में लज्जावश उन्होंने इस वीर्य को जल में डाल दिया। छी! छी! योगिराज श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज जो हमारे एक आदर्श पुरुष हैं उनपर इतना गन्दा और अभद्र दोष। क्या योगियों को ऐसे वीर्यपात हुआ करता है जैसा इस गये बीते युग के बाज़ारी व्यक्तियों को भी नहीं होता। वे तो गीता में अर्जुन को कहते हैं कि यह काम वैरी है। इसको त्यागना चाहिए। कहिए! अब क्या कहना है? क्या पुराण के इस लेख को अब सत्य माना जाए? नहीं, नहीं, कदापि नहीं। श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज ऐसे नहीं थे। यह दोष अवश्य उनके किसी शत्रु ने लगाया है। यद्यपि उनका व्यक्तिगत शत्रु नहीं तथापि

Scanned by CamScanner

हमारी संस्कृति का तो शत्रु अवश्य है।

(३) *ब्रह्माजी पर भी दोषारोपण?*—चारों वेदों के ज्ञाता ब्रह्माजी का वीर्यपात ब्रह्मवैवर्त पुराण में पढ़िये। वहाँ लिखा है कि रति को देखकर ब्रह्माजी का वीर्यपात हो गया और लज्जा के मारे उस महायोगी ने उसे वस्त्र से छुपा लिया। कहिए! एक चारों वेदों का विद्वान् और केवल विद्वान् ही नहीं महायोगी ऐसा हो सकता है? यह ब्रह्माजी पर मिथ्या दोषारोपण है।

(४) *शिवपुराण भी दोषारोपण में पीछे नहीं रहा*—ब्रह्माजी का पुनः वीर्यपात शिवपुराण में भी लिखा है। महायोगी श्री शिवजी और महातपस्विनी सती पार्वती का विवाह संस्कार हो रहा था। चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान् ब्रह्माजी पुरोहित के आसन पर विराजमान थे। इच्छा जागी कि किसी प्रकार पार्वतीजी का मुख देखें सो हवनकुण्ड में जल गिरा दिया जिससे अग्नि बुझ जाए, धुआँ फैले और धुआँ होने पर पार्वतीजी मुँह उघाड़ें। ऐसे मुखड़ा देख लेंगे। ऐसा ही हुआ। ब्रह्माजी ने झट से पार्वतीजी का मुख देख लिया। मुखड़ा देखते ही वीर्यपात हो गया।

यह कैसी लज्जाजनक बात है! क्या हमारे ऋषि-महर्षि पूर्वज ऐसे ही थे? नहीं, कदापि नहीं।

(५) *शिवजी भी नहीं बचे*—महायोगी शिवजी महाराज के वीर्यपात की भी पुराणों में चर्चा है। शिवजी महाराज का तो कई बार वीर्यपात हुआ। ऐसा पुराणों में लिखा मिलता है। शिव पुराण में लिखा है कि एक बार उसे अग्नि ने खा लिया। अग्नि देवों का मुख है। अतः सारे देवों को गर्भ ठहर गया। कितनी लज्जा की बात

Scanned by CamScanner

है! पौराणिक बन्धुओ! इन मिथ्या दोषों से पूर्वजों को बचाओ।

(६) *महर्षि वेदव्यास को भी यही रोग बताते हैं*—देवी भागवत में यह लिखा है कि महर्षि वेदव्यास का एक अप्सरा को देखते ही वीर्यपात हो गया। इसी से शुकदेवजी की उत्पत्ति हुई।

(७) *महाभारत की भी सुनिये*—महाभारत में लिखा है कि गौतम मुनि का जनपदी अप्सरा को देखते ही वीर्यपात हो गया। एक सरकण्डे पर गिरा और उससे कृपाचार्य और कृपी नाम की कन्या जन्मी। वही कृपी कृपाचार्य से ब्याही गई।

(८) *और सुनिये*—महाभारत में आया है कि कश्यप मुनि ने एक सरोवर के तट पर स्नान करती हुई उर्वशी नाम की एक अप्सरा को देख लिया। बस, फिर क्या था, दृष्टि पड़ते ही मुनीजी का भी वही हाल हुआ जो भगवान् श्री कृष्णचन्द्रजी, ब्रह्माजी, वेदव्यासजी, शिवजी व गौतम मुनि का पुराणकारों ने लिखा है। कश्यप मुनि का वीर्य भी व्यर्थ नहीं गया। सरोवर में ही गिरा। उसे जल के साथ एक हरिणी ने पी लिया और वह गर्भवती हो गई और उसने शृङ्ग ऋषि को जन्म दिया।

(९) *कश्यप मुनिजी पुनः फँस गये*—ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी कश्यप मुनिजी की एक ऐसी घटना दी है कि वृषली नाम की एक साधारण कुल की स्त्री ने कश्यप मुनि से वीर्यदान माँगा। ऋषि ने उसको दुत्कार दिया तभी वहाँ एक अप्सरा प्रकट हो गई जिसे देखते ही ऋषि डोल गये और उनका वीर्यपात हो गया। वही वृषली जो वहाँ डटी बैठी थी झट से उसे पी गई जिससे नारदजी की उत्पत्ति हुई।

Scanned by CamScanner

बन्धुओ! तनिक सोचिये तो!!

तनिक सोचें तो! क्या हमारे ऋषि ऐसे ही थे? यदि थोड़ी-सी बुद्धि व थोड़ी-सी विद्या से भी काम लिया जाए तो अवश्य कहना पड़ेगा कि यह हमारी सभ्यता के घोर विरोधियों ने ही उन पूज्यों पर दोष लगाए हैं अन्यथा क्या ऋषियों की यही पहचान है? और ऐसी बात यदि किसी की सच भी हो तो क्या सपूतों का यही कार्य है कि ऐसी-ऐसी बातों को लिखवा कर, छपवा कर कथा करवाएँ? और इसी प्रकार अपने पूर्वजों का अपमान करवाएँ?

आर्यों की अन्तः वेदना

हमारे पौराणिक बन्धुओ! हम आर्य लोग इन ऋषि-मुनियों को केवल आप ही के आदरणीय पूर्वज नहीं मानते प्रत्युत् वे हम सबके—हमारे भी और आपके भी पूज्य थे, अतः इन अश्लील मिथ्याकथाओं को पढ़कर हमारे हृदय को तब गहरी चोट लगती है जब हम उनके ऊपर ऐसे-ऐसे गन्दे आरोप सुनते व पढ़ते हैं। परमात्मा जाने मेरे सनातन धर्मी भाईयों के हृदय किस तत्त्व से बने हुए हैं कि उन पर तनिक-सी भी चोट नहीं लगती। हाँ! चोट लगती है, परन्तु तब जब कोई आर्यसमाजी इन गन्दी-गन्दी कथाओं की चर्चा छेड़े तो और कहे कि देखो पुराणों में ऐसा लिखा है। तब प्रत्येक सनातन धर्मी कहता है, देखो जी! आर्यसमाजी हमारे देवों को गालियाँ देते हैं। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमारे इन भूले, भटके, भ्रमित भाईयों को सद्बुद्धि दे जिससे यह हानि-लाभ, बुराई-भलाई में भेद कर सकें।

Scanned by CamScanner

हा! पाप का इतना बोझ!!
तनिक सोचिये-विचारिये!!!

प्यारे पौराणिक भाईयो! सोचो-विचारो अपनी जाति के पूर्वज महापुरुषों, ऋषियों व पूर्वजों पर लगाए गये कलङ्कों को दूर करो। नहीं तो आपकी गर्दनों पर बड़ा भारी पाप का भार होगा। जो किसी प्रकार भी उतारा न जा सकेगा। इससे देश और जाति को भारी हानि उठानी पड़ेगी। यदि आप अपनी जाति का, देश का व सारे संसार का कल्याण चाहते हो तो इने पुराणों को अति शीघ्र तिलाञ्जलि दो। यह पुराणों का थोड़ा-सा नमूना (**Sample**) दिखाया है। आगे बहुत-कुछ दिखाया जाएगा।

विशेष टिप्पणी—अन्तिम पंक्तियों में लेखक ने पुराणों की सचाई में विश्वास करनेवाले समस्त पौराणिकों को लिखित व मौखिक शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। हम ऐसे पौराणिक भाइयों से कहेंगे कि यदि अब भी वे पुराणों में आस्था रखते हैं तो वे एक बार पं० मनसाराम वैदिक तोप कृत 'पौराणिक पोल प्रकाश' ग्रन्थ को पूर्वाग्रह मुक्त होकर आदि से अन्त तक पढ़ें। इस पुस्तिका के अन्तिम वाक्य को सार्थक करने के लिए हमसे जो कुछ बन पड़ेगा, आगे भी करेंगे।

—'जिज्ञासु'

Scanned by CamScanner